

यावत्स्वस्थमिदं शरीरमरुजं यावज्जरा दूरतो

यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिकृता यावत्तपो नायुषः ।

घातमश्रेयसि तावदेव विडुषा कार्यः प्रयत्नो महा-

न्संदीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः ॥ २४८३ ॥

So lange dieser Körper noch frisch und gesund ist, so lange das Alter noch fern ist, so lange die Kraft der Sinne noch ungeschwächt ist, so lange die Lebenskraft noch nicht schwindet, so lange muss der Verständige mit grossem Ernst an sein Seelenheil denken: wozu das Bemühen einen Brunnen zu graben, wenn das Haus schon in Brand steht?

यावदस्खलितं तावत्सुखं याति समे पथि ।

स्खलिते च समुत्पन्ने विषमं च पदे पदे ॥ २४८४ ॥

So lange man noch nicht gestrauchelt ist, geht man bequem auf ebenem Pfade; sobald man aber gestrauchelt ist, wird es sogleich uneben auf Schritt und Tritt.

यावदृष्टिर्मृगान्तीणां न नरीनर्त्ति भङ्गुरा ।

तावज्ज्ञानवतां चित्ते विवेकः कुरुते पदम् ॥ २४८५ ॥

So lange das biegsame Auge gazellenäugiger Mädchen nicht tanzt, so lange nur hat der Verstand Macht über den Geist der Gelehrten.

या वारिराशिसलिलात्तरसंनिधानसंसेवयापि सततं मलिनैव लक्ष्मीः ।

पात्रेषु रोहृशिखिभागिषु सा विमुक्ता वैमल्यमेति हरिणीव कृताशशौचे ॥ २४८६ ॥

Lässt man die Glücksgöttin, die trotz der nahen Berührung mit den Wassern des Meeres, beständig schmutzig ist, zu den würdigen Männern gelangen, die im Besitz des nach oben strebenden Feuers sind (d. i. zu den Brahmanen), so wird sie fleckenlos, wie das goldene Götterbild im reinen Feuer.

या साधून्किं खलान्करोति विडुषो मूर्खान्कितान्द्वेषिणः

प्रत्यक्षं कुरुते पराक्षममृतं कालाकलं तत्तन्नात् ।

तामाराधय सत्क्रियां भगवतीं भोक्तुं फलं वाञ्छितं

हे साधो व्यसनैर्गुणेषु विपुलेष्वस्यां वृथा मा कृयाः ॥ २४८७ ॥

2483) BHARTR. 3, 76 BOHL. 73 HAEB. 75 lith.
Ausg. I. 84 lith. Ausg. II. 69 GALAN. ÇĀRṆG.
PADDB. VIKRAMĀK. 218. a. स्वस्थो, स्वस्थं
und स्वस्वम्. c. कार्या und कार्याः. d. प्र st.
तु, °खनने.

2484) PAÑKĀT. II, 188.

2485) DHŪRTAS. in LA. 84. Vgl. Spruch
1026 und 1861.

2486) RĀGA-TAR. 5, 15. c. रोर st. रोहृ.

2487) BHARTR. 2, 96 BOHL. lith. Ausg. I. 32
HAEB. 98 lith. Ausg. II. 100 GALAN. a. सा-
धूंश्च, साधूंश्चलान्; द्वेषिणः st. द्वेषिणः. c.
वक्तृतां und शंकरिं st. सत्क्रियां, दात्रीं st.
भोक्तुं. d. मोहाब्धौ und मोहद्वि st. हे सा-
धो; व्यसने und लमतो st. व्यसनैर्; विफ-
लेषु und विफलेषु st. विपुलेषु.